Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
July 2024
ISSN 2229-3388

"भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रेमचंद का साहित्य"

रूबी शर्मा

शोधार्थी, हिंदी विभाग मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

डॉ. सोनिया यादव

निर्देशिका, हिंदी विभाग मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। यहाँ साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर जीवन मूल्यों, दर्शन, आचार-व्यवहार और समाज निर्माण का दर्पण माना गया है। ऋग्वैदिक सूक्तों से लेकर वेदांत, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, लोककथा, संत-साहित्य और आधुनिक गद्य-काव्य तक यह परंपरा सतत प्रवाहित रही है। इस परंपरा में प्रेमचंद का साहित्य विशेष स्थान रखता है। उन्होंने आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय, नैतिक एवं सामाजिक पक्षों को पुनर्जीवित करते हुए लोकचेतना के अनुरूप नई दिशा प्रदान की।

प्रेमचंद केवल कथाकार नहीं, बल्कि समाजद्रष्टा और जीवन-मूल्य के साधक भी थे। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के मूलभूत आदर्श – सत्य, अहिंसा, करुणा, न्याय, समानता, लोकमंगल – स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। उन्होंने साहित्य को "जीवन की आलोचना" बताया और अपनी लेखनी को जनहित के साधन के रूप में उपयोग किया।

साहित्य की परिभाषा

"साहित्यस्य भावः साहित्यम्" अर्थात हित की भावनायुक्त (रचना) साहित्य कहलाती है। "साहित्य- सहित यत् प्रत्यय," साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव, अर्थात 'साथ होना। इस प्रकार सार्थक शब्द मात्र का नाम 'साहित्य' है। साहित्य की यह परिभाषा अत्यन्त व्यापक है और इसमें मनुष्य की सारी बोधन और भाव चेष्टा मिल जाती है तथा अन्य समूह 'साहित्य' के अन्तर्गत आ जाती है। साहित्य मनुष्य के भावों और विचारों की समष्टि है।

प्राचीन काल से यह स्पष्ट है कि 'साहित्य' शब्द मूल रूप में 'शाख' के अर्थ में प्रयोग होता था, परन्तु बाद में 'काव्य' के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होने लगा। भर्तृहरि ने "साहित्य, संगीत, कला की त्रयी में 'साहित्य' को काव्य का समानार्थक माना है।" भर्तृहरि का समय 650 ई0 के आस-पास माना गया है। अतः ईसा की सातवीं शताब्दी में 'साहित्य' शब्द काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगा था। इसी समय लगभग भामहने 'काव्यालंकार' में "शब्दार्थौं सहितौ काव्यम्" लिखकर इस प्रयोग की पुष्टि की। राजेश्वर ने "शब्दार्थ भोर्यथावत्सहभावेन विद्या साहित्य विद्या" कह कर इस परिभाषा को और भी बल दिया है। अन्य शाखों में जहाँ शब्द विषय प्रति पादक मात्र होता है, वहाँ काव्य में शब्द और अर्थ का परम्परा सहित भाव विलक्षण, आहादक और कवि द्वारा विवक्षित होता है। कुन्तक ने 'वक्रोक्ति जीवित में इस प्रसंग में कहा है, "साहित्यम् नयोः शोभाशालितां प्रति काव्यसौ। इसलिए काव्य शास्त्र को 'साहित्य विद्या, 'साहित्य मीमांसा' कहा जाता है। किन्तु आज यह शब्द अँग्रेजी के 'लिट्रेचर' शब्द का पर्याय बन गया है जैसे कानून का साहित्य, चिकित्सा का साहित्य आदि।

1. भारतीय ज्ञान परंपरा और उसका स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद और गीता जैसे ग्रंथों में मिलता है। इनका प्रमुख लक्ष्य सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय रहा है। इसमें ज्ञान को केवल बौद्धिक या अकादमिक उपलब्धि न मानकर जीवन जीने की कला, आत्मसंयम, कर्तव्यपालन और समाज के प्रति उत्तरदायित्व के रूप में देखा गया है।

वेदों में **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का उद्घोष मिलता है। उपनिषद आत्मा और ब्रह्म के अद्वैत की शिक्षा देते हैं। महाभारत और रामायण धर्म, कर्तव्य और समाज-न्याय का प्रतिपादन करते हैं। भक्ति-साहित्य लोकभाषा में जीवन-मूल्यों का प्रचार करता है। यह पूरी परंपरा प्रेमचंद के साहित्य में नए रूप में दिखाई देती है।

2. प्रेमचंद का साहित्य और भारतीय ज्ञान परंपरा

प्रेमचंद ने साहित्य को केवल सौंदर्य या शिल्प की वस्तु न मानकर जीवन-यथार्थ और मूल्य-चेतना का संवाहक बनाया। उनकी कहानियों और उपन्यासों में वेद-पुराण में उल्लिखित करुणा, सत्य, समता और न्याय की धारा आधुनिक परिस्थितियों में जीवित होती है।

करुणा और दया का आदर्श : 'पूस की रात' और 'पंच परमेश्वर' जैसी कहानियाँ मानवीय संवेदना की चरम अभिव्यक्ति हैं।

न्याय की भारतीय परंपरा : 'पंच परमेश्वर' में न्याय को ईश्वर का स्थान दिया गया है – यह सीधे भारतीय न्याय-परंपरा की प्रतिध्वनि है।

समानता और लोकमंगल : 'गोदान' में किसान जीवन की पीड़ा और समाज में व्याप्त असमानता को दूर करने का संदेश है। यह गीता और उपनिषदों में बताए गए कर्म और लोकसंग्रह के सिद्धांत से मेल खाता है।

नैतिक आचरण: 'गबन' और 'कर्मभूमि' में नैतिक दुविधाओं के बीच चरित्रों का संघर्ष भारतीय ज्ञान परंपरा की नैतिक चेतना को पुनः पुष्ट करता है।

3. समाज सुधार और भारतीय मूल्य

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक बड़ा अंग है – धर्म और समाज सुधार। संत कबीर, तुलसीदास, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी इसी धारा को आगे बढ़ाते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में दलित, स्त्री और किसान जैसे उपेक्षित वर्गों की आवाज़ को स्वर दिया।

उन्होंने स्त्री-शिक्षा और स्वावलंबन की वकालत की ('निर्मला', 'सेवासदन')

उन्होंने दलित जीवन की पीड़ा को सामने रखा ('सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ')।

किसानों और मजदूरों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई ('गोदान')।

यह सब भारतीय ज्ञान परंपरा के सर्वजनहित और समता के मूल्यों का ही आधुनिक पुनर्पाठ है।

4. प्रेमचंद और गांधी-चिंतन

प्रेमचंद पर गांधीजी के विचारों का गहरा प्रभाव था। गांधीजी की सत्याग्रह, स्वदेशी और अहिंसा की नीतियाँ प्रेमचंद की रचनाओं में प्रतिबिंबित होती हैं। 'कर्मभूमि' उपन्यास इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें सामाजिक सेवा, जनजागरण और संघर्ष के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

5. प्रेमचंद और लोकचेतना

भारतीय परंपरा में लोकमंगल और लोकहित ही साहित्य का परम उद्देश्य रहा है। प्रेमचंद ने साहित्य को जनसाधारण से जोड़ा। उन्होंने किसानों, मजदूरों, स्त्रियों और वंचितों को अपनी कहानियों और उपन्यासों का नायक बनाया। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा के "वसुधैव कुटुंबकम्" आदर्श का ही आधुनिक रूप है।

6. प्रेमचंद और कथा साहित्य

कथा साहित्य में तो संवाद-योजना का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि संवाद के बिना कथा रची नहीं जाती है। कथा का भाषिक माध्यम ही संवाद है, कहानी की वास्तविक प्रगति पात्रों के मुँह से निकलने वाले संवादों से ही शुरू होती है। एक कुशल कहानीकार, जिसमें कहानी कला की वास्तविक पहचान, अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता एवं अनुभूतियों की सार्थक एवं गहन पकड़ है, वह संवादों के जरिये ही अपनी कहानी को रूपायित करेगा। श्रेष्ठ रचना की यही कसौटी है। इस अर्थ में विचार करने पर पता चलता है कि किसी भी कहानी की सफलता उसमें प्रयुक्त संवादों के अवसरोचित, पात्रोचित एवं प्रभावशाली प्रयोग पर निर्भर है।

प्रेमचन्द ऐसे ही सफल कहानीकार हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य में मानव जीवन की स्वाभाविक एवं सार्थक अभिव्यक्ति हेतु संवादों की विशेषता को स्वीकार किया है और उसी के अनुरूप अपनी कहानियों को रूपायित किया है। उनकी कहानियों की सफलता काफी हद तक उनमें प्रयुक्त संवाद-योजना के बहुआयामी प्रयोग एवं प्रभाव पर निर्भर है। हिन्दी कहानी साहित्य को उसके प्रारम्भिक काल में ही प्रेमचन्द जैसे, कालचक्र की सीमाओं को लाँघकर आगे बढ़ने वाले कथाकार मिले जिनकी साहित्य साधना में पलकर वह उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हुए। इस महान कहानीकार की साहित्यिक उपलब्धियों पर आज तक जितना भी शोध कार्य संपन्न हुआ है, मेरे ख्याल से वे सब उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व की ओर झाँकना मात्र ही है। अर्थात्, प्रेमचन्द के पूरे कहानी साहित्य को आधार बनाकर उनके समग्रतामूलक और गहन अध्ययन का कार्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। प्रेमचन्द के सृजनधर्मी व्यक्तित्व निरन्तर समय की सीमाओं का अतिक्रमण कर रहे हैं जिनकी गहराई को नापना एक शोधार्थी के लिए टेढ़ी खीर है। क्योंकि उनके साहित्य-संसार की चर्चा नवीन एवं प्रासंगिक है। हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि उनका साहित्य जितना उनके समय में प्रासंगिक एवं नवीन था, उतना आज भी है। प्रस्तुत शोधकार्य इसी दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है।

कथ्य और शिल्प दोनों की दृष्टि से हिन्दी कहानी को विकास की गति प्रेमचन्द जैसे कहानीकार की साहित्य साधना से प्राप्त हुआ है। हिन्दी कहानी साहित्य को एक नया मोड़ देने में प्रेमचन्द का हाथ सबसे बड़ा है। वास्तव में हिन्दी का द्वितीय उत्थान प्रेमचन्द युग है। इसमें कोई दूसरा पक्ष नहीं है।

7. अनुवादक प्रेमचन्द

प्रेमचन्द एक सफल अनुवादक भी थे। उन्होंने जिन पाश्चात्य लेखकों को पढ़ा था और जिनसे प्रभावित हुए थे। उनकी कृतियों का अनुवाद भी किया था। रूस के महान लेखक टॉल्स्टाय के कथा-साहित्य ने उन्हें आकृष्ट किया तो उन्होंने उनकी कहानियों का अनुवाद 'टॉल्स्टाय की कहानियाँ' (1923 ई०) नाम से प्रस्तुत कर दिया। इसी प्रकार फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार 'अनातोले' फ्रांस की प्रसिद्ध कृति 'थायस' का अनुवाद उन्होंने 'अहंकार' (1923 ई०) नाम से किया। गाल्सवर्दी के तीन नाटकों- 'स्ट्राइक', 'दि सिल्वर बॉक्स' और 'जस्टिस' का अनुवाद उन्होंने क्रमशः 'हड़ताल (1930 ई०), 'चाँदी की डिबिया' (1931 ई०) और 'न्याय' (1931 ई०) नाम से किया। बर्नार्ड शॉ के नाटकों की धूम मचने पर उनके एक नाटक 'बैक टु मेथ्यूसेलह' (ठंबा जव डमजीनेमसंी) का अनुवाद 'सृष्टि का आरम्भ' (1939 ई०) नाम से किया। प्रारम्भ में उन्होंने जार्ज इलियट के एक उपन्यास 'साइलस मार्नर' (1861 ई०) का अनुवाद 'सदासुख' (1920 ई०) नाम से किया था। रतननाथ सरशार कृत 'फसान-ए-आजाद' का अनुवाद दो भागों में 'आजाद कथा' (1927 ई०) नाम से प्रस्तुत करके आपने अपनी विनोद-वृत्ति का परिचय हिन्दी साहित्य को बहुत पहले ही दे दिया था। अपने अनुवादों में प्रेमचन्द ने मूल कृतियों का प्रायः हिन्दी-रूपान्तर कर दिया है। संभवतः ये अक्षरशः अनुवाद के पक्ष में नहीं थे प्रकट है कि प्रेमचन्द का अनुवाद साहित्य कम नहीं है। वस्तुतः उनकी मौलिक रचनाएँ इतनी लोकप्रिय हुई कि अनुवादों की ओर हमारा ध्यान ही नहीं गया।

8. समकालीन महत्व

आज भी जब साहित्य और समाज के बीच दूरी बढ़ रही है, प्रेमचंद का साहित्य हमें यह सिखाता है कि साहित्य तभी सार्थक है जब वह समाज के दुख-दर्द से जुड़ा हो। भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत स्वरूप प्रेमचंद की रचनाओं में देखा जा सकता है, जो न केवल भारतीय समाज बल्कि वैश्विक मानवता को भी नई दिशा देता है।

उपसंहार

भारतीय ज्ञान परंपरा में साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना और समाज में समानता, करुणा और न्याय स्थापित करना है। प्रेमचंद का साहित्य इस परंपरा का आधुनिक स्वरूप है। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित कर समाज को नई दृष्टि प्रदान की। उनकी रचनाएँ आज भी हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य का सबसे बड़ा धर्म है – मानवता और लोकमंगल।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

2. नामवर सिंह – कहानी नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. रामविलास शर्मा – प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. सत्यप्रकाश मिश्र – भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिकता, साहित्य भवन, इलाहाबाद।

5. प्रेमचंद – मानसरोवर (खंड 1-8), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

6. प्रेमचंद कथा साहित्यः समीक्षा और मूल्यांकन, डॉ धर्मध्वज त्रिपाठी, नई दिल्ली।

7. कथाकार प्रेमचन्द, डॉ रामदरश मिश्र, डॉ ज्ञानचन्द गुप्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।